सतर्कता

मित्रों Life में हमेशा सतर्क रहना चाहिए। अगर आप सतर्क रहेंगे तो Safe रहेंगे। अगर आपको कुछ भी गलत लगे तो तुरंत ही अपने घर अपने Parent को बताएं। आज की कहानी इसी पर आधारित है।

एक घने में जंगल में एक शेर रहता था. एक दिन उसके पैर में काँटा चुभ गया. काँटा चुभने के कारण उसका चलना मुश्किल हो गया और इस वजह से वह शिकार भी नहीं कर पा रहा था और वह काफी कमजोर हो गया.

शेर कभी भी मरा हुआ शिकार नहीं खाता, लेकिन मरता क्या न करता वह मरे हुए शिकार की खोज में भटकने लगा, जिससे भूख मिटाई जा सके, लेकिन उसकी नसीब बड़ी ही खराब थी.

उसे मरा हुआ जानवर भी नहीं मिला. चलते- चलते वह एक गुफा के पास आ पहुंचा. गुफा गहरी और संकरी थी. वह गुफा के अन्दर झाँका तो उसमें कोई नहीं था , लेकिन उसमें किसी जानवर के होने प्रमाण नजर आये. शेर सोचा वह जानवर बाहर गया होगा. क्यों ना इस गुफा में छुपकर बैठ जाता हूँ और जैसे ही जानवर आएगा, उसे खा जाऊँगा.

उस गुफा में एक सियार रहता था. वह बड़ा ही चालाक था. वह सूरज डूबने के साथ ही वापस लौटा तो उसे शक हुआ.उसने सोचा और एक तरकीब निकाली. गुफा के मुहाने से दूर जाकर सियार ने आवाज दी " गुफा ओ गुफा" गुफा से कोई आवाज नहीं आई.

सियार ने फिर आवाज लगाईं " गुफा ओ गुफा, क्या हो गया है आज तुझे? तू बोलती क्यों नहीं है?" भीतर शेर दम साधे बैठा था. भूख के मारे जान जा रही थी.

वह बस यही सोच रहा था कब सियार आये और वह उसे अपने पेट में पहुंचाए. तभी सियार फिर जोर से बोला "ओ गुफा, रोज मेरे पुकार का जवाब देकर तू अन्दर बुलाती थी. आज क्या हो गया तुझे? मैंने पहले कह दिया है तू मुझे अगर नहीं बुलाएगी तो मैं गुफा में नहीं आऊंगा. मैं जा रहा हूँ?"

जाने की बात सुनते ही शेर हडबड़ाया. उसने सोचा लगता है गुफा सच में सियार को अन्दर बुलाती होगी. उसने तुरंत ही आवाज बदलकर बोला" सियार राजा, अन्दर आ जाओ. "

मैं कब से तुम्हारी राह देख रही थी". सियार शेर की आवाज पहचान गया और उसकी मुर्खता पर हंसता हुआ चला गया और फिर कभी लौटकर नहीं आया. मुर्ख शेर भूखा- प्यासा उसी गुफा में मर गया.

मित्रता

मित्रता पर आज तक बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन कलयुग में इसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। जीवन के सबसे सुन्दर, सबसे सुखद और सबसे प्यारे रिश्ते मित्रता के बारे में इंसान या तो निशब्द रहकर इसके सुखद एह्सास की गहराईयों खोया रहता है और यदि बोलता है तो ऐसे बोलता है कि थामने का नाम ही नहीं लेता है. क्योकि यह रिश्ता है ही ऐसा सुखद और सलोना कि इस पर अपने भाव और विचार अभिव्यक्त करने वाला कभी थकता ही नहीं है.

मित्रता किसी प्रयोजन से या आयोजन से नहीं होती है, यह तो बस हो जाती है. इस दुनिया में जितने भी रिश्ते उदात्त भावों से जुड़े हैं , वे स्वयं घटित हुए हैं , कभी प्रायोजित नहीं किये गए. दुनिया के अन्य रिश्ते भी जैसे माँ-बेटी, मां - बेटा, पिता - पुत्री, पिता - पुत्र, भाई -बहन, पति - पत्नी जब मित्रता के भाव में उतर जाते हैं तो बड़े गरिमामय और महिमामय हो जाते हैं.

दो व्यक्तियों का एक -दुसरे के प्रति संवेदना , सम्मान, प्यार, समान प्रवृति, समान सोच, समान नजरिया, सामान प्रतिक्रया यह सब मिलकर मित्रता को जन्म देती है.

ये सारे विन्दु मित्रता को फूल की तरह पंखुड़ी दर पंखुड़ी विकसित करते और महकाते चले जाते हैं. जब दो लोगों के बीच मित्रता अ बीज पड़ता है तो पता ही नहीं चलता है कि इसका बीजारोपण कब हुआ, कब इसकी कोपलें फूटी, कब वह फूल बना कब वह महका, कब वह मीठे भावों से तरंगायित हुआ , कब मधुर सी संगीत उसमें समाहित हुई.

बस एक पावन और मनभावन प्रक्रिया के तहत यह सब घटित होता जाता है और एक दिन दो लोग अपने को , एक दुसरे के सबसे अच्छे मित्र की रूप में पाते हैं.

ट्रेनिंग

मित्रों हमारे शिक्षक जौहरी की तरह होते हैं। वे अपनी पारखी नजर से छात्रों को पहचान जाते हैं और उन्हें तराश कर सच्चा हीरा बनाते हैं। मित्रों हमेशा शिक्षकों का सम्मान करो। शिक्षक समाज बनाते हैं।

कुश्ती के उस्ताद गुरु जगत बहादुर का अखाड़ा सुबह 10 पहलवान रोज ही अभ्यास किया करते थे। जगत बहादुर अपने शिष्यों को कुश्ती का गूढ़ से गूढ़तम दांव पेंच सिखाते थे।

उनके अखाड़े में एक 10 साल का लड़का प्रत्येक दिन पहुँच जाता था। अन्य पहलवानों की भांति वह भी लंगोट पहनकर कसरत करता था। समय बीतता गया अब वह बच्चा 18 साल का हो गया था। एक दिन वह 20 किलो का मुगदर उठाकर दांए - बांए घूमने लगा जैसे कोई लाठी को घूमता है।

उसे मुगदर घूमाते हुए देखकर अखाड़े के पहलवानों के साथ- साथ गुरु जगत बहादुर भी भौचक रह गए। उनकी पारखी निगाहों ने उस 18 साल के बच्चे को परख लिया था। जिसका नाम रोशन था। रोशन में उन्हें भविष्य का पहलवान दिख रहा था। उन्होंने रोशन की परवरिश अपनी देख-रेख में शुरू की। धीरे - धीरे उसने सब दांव - पेच सीख लिए और एक नामी पहलवान बना।